एक माननीय सदस्य : सेंट लगा लिया ।

श्री कमल नयन बजाज : सेंट लगाने की जो बात कही तो हमारी जो घ्राणेंद्रीय है यदि उस को तुष्ट करना होता है तो अक्सर लोग सेंट लगा कर फिरते रहते हैं लेकिन उस से जो अत्याचार प्राणन्द्रिय पर होता है उस से शायद वे बेखबर हैं। उस से वह कमजोर पड़ती है । जो सेंट लगाते हैं उस से उन की घ्राणन्द्रिय पर अत्याचार होता है और उस की ताक़त भी कमजोर होती है। माफ़ करें हमारे पालियामेंट के वे सदस्य जो कि यहां पर बैठे हैं अगर मैं यह कहूं कि उनको अपनी घ्राणेन्द्रीय की शक्ति को कुछ कमजोर करने की आवश्यकता महसूस हो गई इसलिये शायद उन्होंने ऐसा किया होगा और इसका इस्तेमाल शुरू किया होगा। लेकिन सवाल वह नहीं है बल्कि सवाल तो यह है कि हम अपनी इंद्रियों को वाजिब तौर से तेज कर सकें । इस सिलसिले में मैं आपको बतलाऊं कि मैं अफ्रीका में गया था। वहां जंगल में मेरे साथ में एक असकारी अर्थात् वाच ऐंड वार्ड वाला गाइड था जो कि वहां का रहने वाला था। वह वाच ऐंड वार्ड का गाइड, जब हम एक पहाड़ के टीले पर गये, क़रीब 3, 4 मील की दूरी पर उस ने कहा कि एक शेर बैठा हुआ है। मैं यह सुन कर हैरान हो गया । हम ने उस शेर को देखने की बहुत कोशिश की लेकिन हमें वह कहीं दिखाई नहीं दिया ।अलबत्ता जब हमने दुरबीन उठाई तो मुझे वह दिखाई दिया । इस से मैं ने अंदाज़ा लगाया कि काम से कम मेरी आंख की रोशनी से उस गाइड की उस असकरी की रोशनी दस गुना अधिक तेज़ थी । यानी मैं 90 प्रतिशत: अंधा हो गया हूं । इसी तरीक़े से हमारी सुनने की ताक़त, हमारे समझने की ताक़त और हमारे सूंघने की ताकत यह सारी हमारी कमजोरी होती जाती हैं। ज्ञान-प्राप्ति के जो हमारे साधन अर्थात् हमारी इन्द्रियां हैं, यदि वे ही कमज़ोर हो गई, तो फिर हमारी ज्ञान प्राप्ति कैसे होगी? इस तरफ़ यूनिवर्सिटी ग्रान्ट्स कमीशन का कोई लक्ष्य नहीं है । मैं आशा करता हूं कि हमारे शिक्षा-शास्त्री शिक्षा-प्रणाली को बिल्कुल परिवर्तित कर के एक ऐसी शिक्षा-प्रणाली का निर्माण करेंगे जो कि जीवित हो और जो हमारे बच्चों को एक सार्थक जीवन व्यतीत करने के लिए सक्षम बनाने में सफल हो । बच्चों को केवल साक्षर बना देने से हमारा काम नहीं होने वाला है ।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपका अधिक समय नहीं लूंगा । आप ने मुझे जो मौका दिया है, उस के लिए धन्यवाद ।

17 hrs.

Mr. Deputy-Speaker: There are still 3½ hours left for this discussion. Discussion on the motion regarding Report of the Commissioner for Scheduled Castes and Scheduled Tribes has been put down for tomorrow. That will come up after this discussion on the UGC Report is over.

Shri Surendranath Dwivedy (Kendrapara): After that there is the Hindu University Bill.

Mr. Deputy-Speaker: After this discussion we will take up the motion regarding Report of the Commissioner for Scheduled Castes and Scheduled Tribes.

CALLING ATTENTION TO MATTERS OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE—(*Contd.*)

(ii) Strike by the workers of the Madras Port Trust

Shri Nath Pai (Rajapur): Sir, under Rule 197 I call the attention of the Minister of Transport to the follow-

ing matter of urgent public importance and I request that he may make a statement thereon:—

"The strike by the workers of the Madras Port Trust."

The Minister of Transport (Shri Raj Bahadur): Sir, as a result of discussions a settlement satisfactory to both the parties has been reached. The strike was called off this afternoon and the workers have returned to their duties.

Shri Nath Pai: In view of the fact that the strike was occasioned by the apprehension entertained by the workers that they will be losing in real wages because of the new practice of recruiting employees and also in view of the fact that the strike was led by a distinguished member of the ruling party, may I know whether the Government in future will refrain from making this slanderous charge against the Opposition that the food situation in the country is caused by irresponsible strikes at ports in the country, as the Prime Minister and some other Ministers are getting in the habit of insinuating?

Shri Raj Bahadur: So far as the leadership of the strike is concerned, it is true that the gentleman today is a member of this party, but till sometime before he was a member of the hon. Member's party and the old habits take time to die out. About the food situation, I do not think it was affected by that. So far as the apprehension is concerned, we have recently commissioned three new berths and that necessitated additional labour. That was not the only reason. The demand for the Union that the existing 'C' category casual and 'B' category semi-casual labour should be upgraded and promoted, and in regard to these matters a settlement has been reached satisfactory to both the parties.

Shri D. C. Sharma (Gurdaspur): Sir, there have been strikes at various ports recently. Those strikes have also interfered with the clearance of stocks of foodgrains that have come from abroad. May I know if the Government is aware of the basic causes that lead to these strikes, if so, what machinery the Government has evolved so that these strikes do not come up in such quick succession at these various ports.

Shri Raj Bahadur: There are many assumptions in the question which the hon. Member has put. So far as the question of affecting the unloading of foodgrains is concerned, it was affected to a certain extent in the port of Bombay when the Food Ministry labour unloading the foodgrains went on go-slow strike for some time. Off and on, strikes have of course occurred in the port of Goa. I know that. But, apart from that, I do not think any other port has been affected. In the Goa port we do not handle foodgrains as much as we handle iron ore.

श्री हुकम चन्द कछवाय (देवास) : क्या इन मजदूर लीडरों या मजदूर-यूनियनों ने सरकार को पहले ऐसा नोटिस दिया था कि यदि उन की मांगों को न माना गया, तो वे हड़ताल करेंगे ? यह हड़ताल कितने दिन तक चली और इससे कितना नुक्सान हुआ ? बन्दरगाहों पर कुल कितना अनाज पड़ा था, जिस को न उठाने से जनता को परेशानी हुई ?

श्री राज बहादुर : स्ट्राइक का नोटिस नहीं दिया गया । यह एक लाइटनिंग स्ट्राइक थी । जहां तक मुझे सूचना मिली है, अनाज के जो एक या दो जहाज थे, उन्होंने उन पर काम किया । इसलिए मैं नहीं कह सकता कि गल्ले के बारे में कोई परेशानी हुई ।

श्री हुकम चन्द कछवाय : अनाज को दूसरे रास्ते से ले जाने में सरकार को कितना नुक्सान हुआ ?

श्री राज बहादुर : यह बताना सम्भव नहीं है कि कितना नुक्सान हुआ । देरी हुई ।

श्री यशपाल सिंह (कैराना): मर्मागोआ में भी हड़ताल हुई थी और यहां भी हड़ताल हुई। सरकार ने क्या कोशिश की है कि आईन्दा इस तरह की स्ट्राइक्स न हों और देश का नुकसान न हो ?

श्री राज बहादुर : मर्मागोआ में जो हड़ताल हुई थी, उस का मुख्य कारण—जैसा कि मेरे सहयोगी, श्रम मंत्री जी, ने बताया था—यह था कि दो तीन यूनियन्ज में आपस में यह बहस हुई कि कौन सी यूनियन वहां के मजदूरों का प्रतिनिधित्व करती है। उस को तय करने के लिए जो कुछ कोशिश हो सकती है, उस के बारे में श्रम मंत्री जी ने अपने बयान में संकेत किया है।

Shri Shinkre (Marmagoa): Are Government trying to study the whole problem on an all India level and devise ways and means to avert such strikes in future?

Mr. Deputy-Speaker: We are now concerned only with the strike in the Madras port.

Shri Shinkre: As the strike has taken place there, will Government look at it in relation to the whole country?

Shri Raj Bahadur: The situation is constantly under review and it is with that end in view that we have recently appointed a Wage Board to go into the question of wages and allowances etc. for the port workers.

17.08 hrs.

BANK OF CHINA*

Mr. Depupty-Speaker: We will now take up the half-an-hour discussion.

श्री प्रकाशवीर शास्त्री (बिजनौर) : उपाध्यक्ष महोदय, बैंक आफ़ चाइना के सम्बन्ध में जो चर्चा मैं उपस्थित कर रहा हूं, इससे पहले लोक-सभा में तेरह बार और राज्य सभा में छः बार इस के बारे में प्रश्न पूछे गये। पीछे 17 सितम्बर, को जब इसी सदन में बैंक आफ चाइना के सम्बन्ध में प्रश्न चल रहा था, तो वित्त मंत्रालय के राज्य-मंत्री, श्री भगत से पूछा गया कि सरकार पिछले दो तीन वर्ष से लगातार इस प्रश्न को टाल रही है और क्या वह अन्तिम रूप से कह सकेगी कि कब तक इस जांच-रिपोर्ट को पूरा सदन के सामने रखा जा सकेगा। उस समय श्री भगत ने जो उत्तर दिया वह शब्द मैं पढ़ कर सुनाता हूं। उन्होंने कहा : "इस अधिवेशन में तो नहीं, मगर अगले अधिवेशन में मैं कोशिश करूंगा कि इस बारे में जांच के परिणाम प्रकाशित किए जा सकें।"

उसी आधार पर यह अनुमान था कि वह रहस्यमय रिपोर्ट इस अधिवेशन में अवश्य उपस्थित हो जायेगी। लेकिन अभी पीछे जब 21 नवम्बर को यह प्रश्न लोक-सभा में आया, तो वित्त मंत्री ने इस सम्बन्ध में कुछ भी परिणाम प्रकाशित करने से इन्कार कर दिया। उन्होंने केवल यह कहा कि कालिम्पांग और कलकत्ता में अभी कुछ इस प्रकार की रहस्यमय जानकारियां और लेनी हैं, जिन के कारण इस रिपोर्ट को प्रकाशित करना ठीक नहीं है। राज्य सभा में भी इसी से सम्बन्धित एक प्रश्न आया और जब कुछ विशेष जानकारी चाही गई, तो वित्त मंत्री ने कहा कि लोक-हित में अभी उस को प्रकाशित करना उचित नहीं होगा।

उपाध्यक्ष महोदय, आप जानते हैं कि चीन पिछले कई वर्षों से भारतवर्ष पर आक्रमण करता चला आया है। केवल 1962 में उस ने हमारी सीमाओं पर ही आक्रमण नहीं

*Half-An-Hour Discussion.